

॥ आ ७८१॥

॥ श्रीगामविजयवस्तुमाध्यायप्रारंभः ॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥ श्रीमहागणाधिपतये नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवेरपुरुषाय नमः ॥ श्रीरामचंद्राय नमः ॥
 धन्यधन्यं तु ह्यसि संतजन ॥ राममहिमार्णविं नेमिन ॥ त्यंतिलबनुभवसंपुर्ण ॥ द्रस्यमानस
 र्वलुप्ता ॥ १ ॥ राजभांडारिंचिरत्नं बहुत ॥ तेषां उरिया सांठविं किं समस्त ॥ किं मित्र प्रभेचाजं
 त ॥ जरुणयेक जाणतसे ॥ २ ॥ पृथिव्ये कितिवजन ॥ हे भोगेद्र जाणें संपुर्ण ॥ किं बाकाशत्वे
 थोरपण ॥ प्रभं जन जाणतसे ॥ ३ ॥ कविनिपद्यरचना किति ॥ ते येक जाणे सरस्वति ॥
 चंद्रामृतकाणि जे बहुति ॥ परिमहिमा जाणति चकोर ॥ ४ ॥ किं प्रेमळकळा मोड बहुत ॥
 हुं येक जाणति भोळे भक्त ॥ किं रामकथेचा प्रांत ॥ वाम्लिक येक जाणतसे ॥ ५ ॥ रामनामा
 चामहिमा बहुत ॥ येक जाणे कैसा रत्ननाथ ॥ किंचरणरत्नांचा प्रताप बहुत ॥ विरंचि
 तनय जाणै ॥ ६ ॥ ह्मणोनि राम किर्तन गोड बहुत ॥ लथिंचा सुरस शेविति संत ॥ ७ ॥

॥क॥

असोससमो ध्याइंगलकथार्थ॥ मिथुकेसमिपसर्वराहिले॥७॥ देशोदेशिचे नृपा॥ त्यांशि
 मुळधाडिमिथुकाभुप॥ पथुनेसहितबभुप॥ राजेलेवताहिपालले॥८॥ मुळधाडिलेंद
 शरथा॥ पैरितोनयेचिसर्वथा॥ वियोगवैवाथोरयाशि॥९॥ कौशिकचेउनिगे लारवु
 नाथा॥१०॥ माझेसकुमारदोघेजण॥ कौशिकलाजसेघेउन॥ माझियाश्रीरामाचेंवदन॥
 कैमिदेखेनपुढति॥११॥ वियोगानेकेकन॥ आवणारिआहवेरात्रिदिन॥ मिथुकेशि
 नवजावयाशिपुर्ण॥ हेचिकारणजाणिले॥१२॥ ईकडेऋषिसहितकौशिक॥ आला
 जैकोनिरावजनक॥ नगराबाहेरतालाकिक॥ सामोराबालासमारंभे॥१३॥ मुर्तिमंत
 सुर्यनारायण॥ जैसायेकेकब्राह्मण॥ देखतांजनकेंलोटांगण॥ समस्ताशिचातले॥१४॥
 जनकहृणभाम्यअहुता॥ जैचराबालेसाधुसंत॥ आजिमिजालोपुनिन॥ पुर्वपुण्यफ

(3)
॥२॥

काशिनाले ॥१४॥ नृपसादरपाहेवि लोकुब ॥ हृणेशमसुंदरदोषजण ॥ कौशिकहेको
णाचेकोण ॥ सकुमारसगुणजाणिले ॥१५॥ किंशशिआणिचंडकीर्ण ॥ किनानस्पति
आणिसहस्रनयन ॥ किंरमापतिउमापतिदोषजण ॥ सुवेशथरनिपातले ॥१६॥ वाटे
यांचास्वसपावसन ॥ कोट्यानकोटिमिनकेतन ॥ टाकावेकुरवंडिकसन ॥ पाहातामनउन्न
तहोय ॥१७॥ जनकाशिहृणेशविश्वामित्र ॥ हरायादशरथान्वयुत्र ॥ यांचवर्णवयाचरि
त्र ॥ सस्रवक्ताशक्तिनके ॥१८॥ येणेमार्गताटिकावधुन ॥ शिथिपावविलासाझायज्ञा ॥
विसकोटिपिशिताशन ॥ सुबाहुसहितमरिल ॥१९॥ मार्गिचरणरंजंकसन ॥ उधरिलेस
रसिजोझवनंदिनि ॥ हारकोदंडपाहावयानयनि ॥ हृणोनियेथेपातले ॥२०॥ साक्षांत
हेशेषनारायण ॥ रायालुनांनकरितांघेन ॥ घाराजालेमुळेविण ॥ भाग्यपूर्णलुयेका ॥२१॥

॥२॥

(38)

अवचिताजैसनिधमेरुता॥ चिंतामणियेउनपुटेपडला॥ किंकलदमस्वयेआला॥ य
 हशोधितदुर्वकाये॥ २२॥ शास्त्राभ्यासावानुन॥ भाग्येजातेअपरोक्षज्ञान॥ किंमृतिका
 स्वाणितानिधान॥ अकस्मातलागते॥ २३॥ जेभाग्योदयहोयनुपति॥ तैद्यरिचाहासि
 शिष्टिहोति॥ कल्पीतिफळेलाकावदेति॥ उगणियेरक्षजेका॥ २४॥ हुंलिपाशा
 अथरितां॥ तोचिंतामणिहोयतत्त्वला॥ लुणघेरक्षणनलागतां॥ सुवर्णमंदिरपै
 होति॥ २५॥ खड्गगाईदुभति॥ वैरितेचिमित्रहोति॥ विशेषयैप्रकाशनिजमति॥
 राजेपुजिलियेउनिधरा॥ २६॥ समयाजितहोयस्फुर्ति॥ दिगांतपर्यंतजायकिर्ति॥
 पदोपदिनिश्चिंति॥ यशजोडतयाते॥ २७॥ असोजनकाशिह्मणेविश्वामित्र॥ उद
 यपावलातुझाभाग्यमित्र॥ घराशिआलास्मरारिमित्र॥ सकळअमित्रांनाशकजो॥ २८॥

(५)
॥३॥

जनकैकरनिबहुलबादर॥ विश्वामित्रश्रीरामसौमित्र॥ निजसभेशिबाणुनिसत्वर॥
मानदेउनिबैसविले॥ २९॥ देशोदेशिचेनुपति॥ रामदेखेनिबाञ्चिर्यकरिति॥ शि
तायाविहोयाप्रति॥ नवराश्रीपतिमाजिरा॥ ३०॥ येकक्षणतिसैवरिकेकापण॥ भा
गवचापाचढवावाण॥ हेकार्यपरमकरिया॥ रामाशिकेविंआकळे॥ ३१॥ मनातह
केणेजनैनुपवर॥ जरिजांवईहोईवरबुधिर॥ तरिमाझ्याभाग्याशिनाहिपार॥
परिपणदुर्घरपुढेंअसे॥ ३२॥ तवतयामंडपागणि॥ परमचपळतरणवारिणि॥
वरिचैवरडोळजडिलरलि॥ सकळनअसेअसंत॥ ३३॥ त्यामाझिवैसलिजन
केवाळा॥ हातिंघेउनिचंपकमाळा॥ विलोकितसकळमुपाळा॥ ऋषिवृंदासहिव
पै॥ ३४॥ जवळसरवियासकळअसति॥ श्वेतचामरेंवरिठळिति॥ येकक्षणक्ष

॥३॥

५४
 णां गंगारसावरिति ॥ विडियादेति ये ये कि ॥ ३५ ॥ जे त्रिभुवन पति त्रिमुख्य राणि ॥ आदि
 माया प्रणव रूपिणि ॥ ईशामात्रं करुनि ॥ ब्रह्मांड हृद्य ड मोडि ॥ ब्रह्मादिक बाके आ जेत ॥ आ
 पुळे निज गर्भि पालिता ॥ तिचे स्वरूप लाव पय बहुत ॥ कवणा लागि वर्णावे ॥ ३६ ॥ अने
 तं शक्ति कर जोडुन ॥ जिये पुढे उभ्या ठाक विये पुन ॥ जिणे आदि पुरुष जागा करुन ॥ सगुण
 त्वाशि अणि ला ॥ ३७ ॥ या ब्रह्मांड मंडपा माझारि ॥ जनक बास जा बैशि सुंदरि ॥ उप
 माद्या वया दुसरि ॥ कोणे अवतारि नरे चि ॥ ३८ ॥ जैसे जांबुनंद सुवर्ण तया ॥ तैसे स
 र्वगदिसे विराजित ॥ आकर्षने त्रविकाशता ॥ मुख मंगा कन वर्ण वे ॥ ३९ ॥ मुखे शक
 केदंत पंक्ति ॥ बोललां पडे परमदिसि ॥ पाशा मले पञ्चराग होति ॥ रत्ने विश्वरति बोल
 लां ॥ ४० ॥ जानकि आगि चां सुवास ॥ जे दुन जाय महदाकाश ॥ जिणे भुक्त विलाज आदि

(5)

॥५॥

पुरुष ॥ आमुलं स्वरपविलासे ॥ ४३ ॥ पदठे वितो दिव्य धरणि ॥ पदमुद्रा उमटे जे स्थानि ॥
तेथै वसंत यउनि ॥ लोकतभु लेनि सुवासा ॥ ४४ ॥ चंद्रसूर्यो चाग केनि जोति ॥ तै शिंक
र्णपुष्पें झळकति ॥ कर्णमुक्तचो शठाळदेति ॥ सुतिका पुंजा सरिखें ॥ ४५ ॥ आकर्णप
र्यंत विशाक नयन ॥ माजि विलसे सो गया चं अजन ॥ कपाळि मग मदारे खिला पुष्प ॥
वरि विजवरा झळकत जसे ॥ ४६ ॥ शिंत दाह कले सांडुनि ॥ शशाक जाणि वासर मणि
॥ सदां विलसता ति दोळी ॥ मुक्त जळि मणो जे झी ॥ ४७ ॥ विद्युत् प्राय दिव्यांबर ॥ मुक्त
लगने छिपवित्रा ॥ वरिये कावळि मुक्त तर ॥ पदकिंन पार ते जफां कें ॥ ४८ ॥ दशां गुंळि
मुद्रिका ये त्राकार ॥ वज्रचुडे मंडित कर ॥ कंठिकं छिहरे थोर ॥ जे सें दिन कर वळिने
॥ ४९ ॥ वांकिने पुरें दिव्य चरणि ॥ रण सुगति चालतां धरणि ॥ जिचिया स्वसपा वरनि ॥

॥५॥

कोटिअनेगवोवाकिजे ॥ ५० ॥ असोअैशितेचि लका ॥ सकळसभाविलोकिडाका ॥ तों ऋषिपं
 तिमज्जिअनसावळा ॥ परब्रह्मपुनकादेखिका ॥ ५१ ॥ विजया नावे सखिये प्रति ॥ शिताक्ष
 णपाहे ऋषिपंति ॥ त्यामाजिविलसेजे मुर्वि ॥ माझिप्रिति झडलि तेथें ॥ ५२ ॥ चवशामसुंद
 ररपडे ॥ देखतां कामाचि मुरकुंडिपडे ॥ सखेअै साजरे मजवर जोडे ॥ तरि धन्यमिगे सौसा
 रि ॥ ५३ ॥ बहुतजन्मपरियंत ॥ झरितपकल यथार्थ ॥ तरि ब्रह्ममजहोई लकांत ॥ विजये
 निश्चीत जाणया ॥ ५४ ॥ नवसकरकोण कोण प्रति ॥ कोलें पावेल मज शक्ति ॥ रघुविरम
 ज जोडे लपति ॥ तरि त्रिजगति धन्यमि ॥ ५५ ॥ राजिवनेत्रें सांवळा ॥ स्वरूप ठसा सर्वांत जा
 गळा ॥ आयु न्माहोते याशिवालि न माळा ॥ मगतो सोहळा नवर्णवे ॥ ५६ ॥ तों विश्वामित्र
 हणें जनका प्रति ॥ आतां कोदंड आणावे शिघ्रगति ॥ मिळाले येथें सर्व नयलि ॥ जे पुर

(6)

॥५॥

पार्थिवोरथोरा॥५॥ अह्यचक्रषडचक्रप्रचंड॥ सावीरठेविलेचंडकोदंड॥ सहस्रविशंवे
दंड॥ वोढितांभागलेनढकेचि॥५॥ मगबहुतगजभारकाविले॥ रंगमंडपावोढुनिआ
णिले॥ देखतां सर्वराजेदचकले॥ ह्यणतिहेनुचलेकोण्डाशि॥५॥ येकह्यणतिहेशिव
चाप॥ उचलिलेसैनानदिसेभुप॥ येकोसुटलाचक्रकंप॥ गेलेदर्यगळेनियो॥६॥
येकमाहविरबोलत॥ जाहिकौतुकपाहोआलोयेथ॥ येकह्यणतिजनकाचाशेहबहुत
॥ ह्यणेनिभेटिशिपातले॥६॥ जनकसांगककाले॥ हेविरपक्षचापचेउनिस्वहसे
॥ शिक्षालाविलदक्षाते॥ सहस्राक्षालेनुचलेहे॥६॥ जैशियाचापाशिउचलुन॥ जो
राजेद्रलविलगुण॥ त्याशिहेजानकिसगुण॥ माक्यालिलस्वहसे॥६॥ तटस्न ॥५॥
पाहातिसकळविर॥ कोण्हीनदेत्तिप्रत्योतर॥ कोणिसंबरोनियाधिर॥ चापउचलुभाविनि॥६॥

(6A)

तो

तो मुळ न पाठवितां रावण ॥ प्रधाना सहित ना लाधा वों न ॥ सभागज वज्रिलि संपूर्ण ॥ स्व
 णति विघ्न आलेहे ॥ ६५ ॥ आतां गति न के वरि ॥ बळेचि उचलुनि नेई लो नो वरि ॥ कोणही
 हृषति क्षण भितरि ॥ चण्डि शचाप वट विलेहा ॥ ६६ ॥ जनका सहजणे रावण ॥ तुवां थ
 नुष्या चा के लापण ॥ तरिते क्षण मात्रे मोडुन टाकिना ॥ कुट के करि न आलां चि ॥ ६७ ॥
 म्या हा लविले कै लास ॥ बंदि घावले विदेश ॥ जैरा वलिसमवेत देवेश ॥ समर भुमि शि
 उळयिला ॥ ६८ ॥ तो मिरावण प्रताप पुरा ॥ पाप उचलावया काय उशिर ॥ उपजेनियां
 मेरु मांदार ॥ कंदुका जै सेतु डविन ॥ ६९ ॥ पश्चि उचले निबक स्मात ॥ घालुं शकें मिस
 मुद्रांत ॥ किं च येई वा जैसा सरि नाथ ॥ क्षण मात्रे पोरिनि मि ॥ ७० ॥ तरि आलां हे चि
 प्रलिज्ञा पाहिं ॥ हे चाप मोडुनि लवलाहि ॥ होई न जनका चा जावई ॥ सकळ राया देखतो ॥ ७१ ॥

ॐ

॥६॥

वसने मुषणे सावरन ॥ चापा कडे चालि लारा वण ॥ गज बजिले जाव किचे मन ॥ अति
उद्विग्न जाहलि ॥ ७२ ॥ हृषणे अपर्णा पत्ति त्रिनयना ॥ त्रिपुरांत काम रुनद हंसा ॥ तुझे ना
चाप नु बळेरा वण ॥ गजास्य जन कापे न वंका ॥ ७३ ॥ या दुर्जनाने तो उकाळे ॥ स
शशिवा करिं शिघ्र काळे ॥ माहादेव ते प्रचंड सकळे ॥ या धनुष्या वरि बैसविं ॥ ७४ ॥
अहो अंबे मुळ पिठनि वाशिणि ॥ मंगळ करि के आदि जननि ॥ यारा वणा चि शक्ति
हरे नि ॥ नेई मंडाणि सत्वर ॥ ७५ ॥ नैस जाव कि प्रार्थित ते वेळे ॥ देव ते धाविं नें लिं
सकळे ॥ गुसरपें शिघ्र काळे ॥ येउनि बैसलिं चापा वरि ॥ ७६ ॥ नव कोरिका त्याय नि ॥
द्यौः सख कोरि माहा योगिणि ॥ त्यां सहित काळिका येउनि ॥ धनुष्या वरि बैसत ॥ ७७ ॥
॥ ७७ ॥ धनुष्य उचलुंगे लाह शवस्त ॥ तव ते नठ के चिबनु मात्र ॥ बळे लाविले विसहि कर ॥

७४
 जालें शरिर निस्ते जपें ॥ ७८ ॥ दिपंति नेन थर प्रांत ॥ शक्रा रिजन कवळें राहित ॥
 चाप उभें करितां खरित ॥ जालें विपरित ते धवां ॥ ७९ ॥ जैसा माहा कुम उन्मळे ॥ तैसें
 चाप उलथलें ॥ शरिर भुमि वरि पडिलें ॥ चाप बैसलें उरा वरि ॥ ८० ॥ जैसा पुर्वि गया सु
 रदैत्य ॥ त्या वरि देविला पै पर्वत ॥ तैसा पडला लंक नाथ ॥ धनुष्य बद्ध त उरा वरि ॥
 ॥ ८१ ॥ रावण पडलां भुतकि ॥ सभे वरि उथळिलि थुळि ॥ दाहि मुखें मृत्तिका भरलि ॥
 आनंदलि जनक आत्मजा ॥ ८२ ॥ दाहि मुखें सधिर वाहाता ॥ कासा विसजाला ज
 संहुत ॥ ह्मणे थांवा थांवा समस्त ॥ धनुष्य वरित काढा हें ॥ ८३ ॥ रावण ह्मणे जन
 का प्रलि ॥ माझे प्राण चालिले निश्चलि ॥ पोरि ईद्रजित कुंभ कर्ण बंलि ॥ तुज नि
 र्हाकिलि जाणयां ॥ ८४ ॥ गज बजिलि सभा समस्त ॥ ह्मणति जांता कोण आहे

(8)

॥७॥

वकिवंत॥ हेचापउचलिलुब्धत॥ माहाजनर्थकोउवला॥ ८५॥ यासजेमाजिवळवंत॥
कोण्णिनाहिरणपंडित॥ कौशिकेंजैशिलैकतांमात॥ खुणविलरामचंद्रा॥ ८५॥ जैसा
निद्रिस्तसिंकुजागाकेला॥ किंयाशिवेजातवेदपुंकि॥ तैसाविश्वामित्रैलेवेका॥
खुणविलरामचंद्रा॥ ८६॥ ह्मणेनरविरपंचानना॥ त्रिभुवनवंथाराजिवनयना॥ पु
राणपुरषारधुनंदना॥ लारिकांतकरमनाउठिवेगि॥ ८७॥ कमकोइवजनकाउदारा
॥ भक्तवत्सळजहिहोध्याश॥ मखपावकासमरधिया॥ असुरसंहारउठिवेगि॥
॥ ८८॥ जैशिलिशासंपतातात्का॥ उदयादिवरियेरविमंडळ॥ तैसारामतमाकनिळा
उठानिउभावाकला॥ ८९॥ किंमाहायागिंहोतांपुर्णहुति॥ लात्काळप्रघटेआराध्य ॥७॥
मुर्ति॥ तैसाउभावाकलारघुपति॥ राजेपाहातिटकमका॥ ९०॥ किंप्रन्हादाकरितंश्रिहरि॥

स्तंभातुनिप्रघटेनरकेशरि॥ किवेशंतज्ञानहोतांअंतरि॥ निजबोधजेविप्रघटे॥
 ॥९२॥ वंदुनियाश्रीगुरुचेचरण॥ तैसेचनमिलेसकळब्रह्मण॥ पुर्णब्रह्मानंदराम
 राणा॥ वेदपुराणावंध्यजो॥ ९३॥ श्रीरामविरकब्रह्मचरि॥ लेआपणाविणकोणानच
 रि॥ यातामिंशरयुतिरविहरि॥ उरतांजातालेथवां॥ ९४॥ सभेशिवैसलेढ्यवर॥
 केलेनानापरिवेष्टंगार॥ परिसर्वतश्चैवममभेद॥ भगणातश्चैवजैसा॥ ९५॥ किं
 शास्त्रामाजिवेदांत॥ किंनिर्जैरामाजिशिविनाथ॥ श्रीरामतैसासमर्थ॥ सभेमाजि
 विराजे॥ ९६॥ उठिलादेखोनिरामचंद्र॥ उचंबळेसुखशिंतासमुद्र॥ नवमेघरंगर
 धुविर॥ रंगमंडपाप्रतिआला॥ ९७॥ केरिअनेगवोवाकुन॥ टाकावेजावानसा
 वसन॥ जोअरिचक्रवारणपंचानन॥ जातलहुनिधनुष्याते॥ ९८॥ देखतांराम

९

॥८॥

सकुमार॥वाविरंशितेचेंअंतर॥हृणकमळगात्ररघुविर॥प्रचंडधारधनुष्यहं॥९॥
कुर्मदुष्टिजैशिकगेर॥तैसेंहकोदंडप्रचंडथोर॥दशरथकुमारसकुमार॥कैसेउच
लिरुहोयातै॥१०॥मदनदहनाचेंहृथनुष्य॥रघुनाथमुर्तिमनोहर॥आहाताला
परमदुर्धर॥अनिवारपणलुझाहा॥११॥यतःशामकोमळगात्र॥रामसकुमाररा
जिवनेत्र॥आहातालापरमदुर्धर॥अनिवारपणलुझा॥१२॥बळाहतकेलुदश
कंदर॥परमकोमळरघुपतिचेकर॥आहा॥अनि॥१३॥वाटेरघुपतिकोमळक
र॥अतशिततनुराजकुमार॥आहा॥अनि॥१४॥मसनमानेचिदुजावर॥लुझस
त्यकरणेपणसाचार॥आहा॥अनि॥१५॥चंडिशकोदंडपरमथोर॥रघुआकृति
रामनिर्विकार॥आहा॥अनि॥१६॥रामावाचुनिईतर॥पुसपलुजसमानसाचार॥

॥८॥

(११)

आह॥॥अनि॥७॥दुजावरावयायेतांवर॥हादेहत्यागिननिर्धार॥आह॥॥अनि॥८॥शि
 ताविजयेशिष्यणेअवधारि॥वापनकेहावाटतोवरि॥हापणत्यजुनिनिर्धारि॥मज्जरा
 माशि कांअर्पिना॥९॥जैसेंशितेचेंअंतरा॥जाणेनियांजगदोधार॥दंडपिटोनिप्रचं
 डविर॥कोदंडसमिपपातला॥१०॥दशरथमोहाराजदिगाज॥त्याचाछावाहारधुरा
 ज॥धनुष्ययुक्षदेखोनि सहज॥परमचपकथविबल॥११॥श्रीरामसव्यबाहुप्रचंड॥
 हाचिवरि केलाहुंडादंड॥भवधनुष्ययुक्षदिखंड॥करिल आतांनिर्धारि॥१२॥दश
 केदरहेपद्मकानन॥विसहस्तदिपंचवदन॥विसकमठेंहेचिपुर्ण॥कोदंडजाणयुक्ष
 लेखें॥१३॥पद्मवनिगजनिघे लवलाहिं॥मग त्याशिकमकगणणाकाई॥लैशिदशमु
 खोचिंहस्तकमठेपाहि॥तुडवितजाळारधुविर॥१४॥तटस्तपाहातिसकळजन॥

(10)

॥१॥

हृणैविजईहोरधुनं हन॥ शितानोवरिहैसगुण॥ याशिचद्यालोनिजमाका॥ १५॥ आंन
दमयसकठब्राह्मण॥ चिंतितिरामशिजयकल्याण॥ हृणैतिहैभवचापमोडुन॥ रा
किलौकरिरधुविरा॥ १६॥ येकहृणैतिरामसकुमार॥ निकपंकजतनुवयकिशोर॥ प्र
वकोहंडप्रचंडथोर॥ उचलेलकैसैइयातें॥ १७॥ येकहृणैतिचिमणैरामाचेठाण॥ येक
हृणैसिंदुदिसैठाहान॥ परिपर्वताकारगजविदारन॥ नलगताक्षणाकिल्लेयें॥ १८॥
घटोद्भवलाहानदिसत्ता॥ परिप्राशिलातणैसरितानाथ॥ गगनिसवितालधुभासता॥
परिप्रभाजडुतनवर्णवे॥ १९॥ असोतेवेकरधुविरा॥ विद्युत्प्रायउत्तरियचिर॥ तेसरसा
उनिसत्तरा॥ करिप्रदेशिवेष्टिलें॥ २०॥ माथामुण्डरनजडिता॥ आकर्णनेत्रविराजता॥ ॥१॥
मस्तकिंचेकेशनभिपर्यता॥ दोहिकडुनिउत्तरले॥ २१॥ किशोरवयातिलभुषण॥ २२॥

10A

आ लकसु वासेभरले गगन ॥ त्या सुवासा शिवे धोन ॥ मिलिंद चक्रे भ्रम तसे ॥ २२ ॥ श्री
 राम तुनु चा सुवास पुणे ॥ जाय सस वर्ण मोदुन ॥ असो ते शिव धनुष्य रघु नंदन ॥ क
 रे कर नि स्पर्शित ॥ २३ ॥ निक वर्ण कुल कले अवसरि ॥ पडलें दशकंठचा उरावरि ॥ विश
 कंठवंदे ने अवसरि ॥ सावरन मोगे ठाकि ॥ २४ ॥ धनुष्यावरि घंटा सलेज ॥ वरि
 विद्यु ह्याय झळके ध्वज ॥ त्यास मवे तर सुराज ॥ उचलिता जाला ते काळि ॥ २५ ॥
 गजशुभु आक्रमि युध्दंड ॥ तैसें रामे आकळिले कोदंड ॥ पराक्रम परम प्रचंड ॥
 दशमुंड विलोकितसे ॥ २६ ॥ परम प्लान दिप चवदन ॥ द्विष्टि देखे नि गोपि नंदन ॥
 ह्मणे नर विरभ्रेष्टा वेगे करन ॥ संशय हूरिं सर्वांचा ॥ २७ ॥ जनक ह्मणे कौशिक मु
 नि ॥ जा-नापें दशकंठ द्यो कला धरणि ॥ ते धनुष्य रामाचे नि ॥ कैसे उचले लजक केहे ॥ २८ ॥

(11)

॥१९॥

जनकाशिह्वणेऋषिकौशिक॥ श्रीरामवैकुण्ठनायक॥ अद्भुतकरिलकोतुक॥ पाहें
नावेक उगाचि॥ २३॥ ईकोड रामेधनुष्यउचलुन॥ क्षणनलगलांचढविलागुण॥ वो
ढिवोढिलिजाकर्ण॥ सुहास्यवदनेतेशवो॥ ३०॥ श्रीरामाचेंबळप्रचंड॥ वोढिस
नपुरेभवकोदंड॥ नडाडिलेंतेकाब्रह्मांड॥ चापकरकरिलेंतेथवां॥ ३१॥ मुखिमा
जितडाडित॥ जैशासहस्रचपकाकडकरित॥ विधिरत्रारिहडबडित॥ वाढेकळीं
तजांहालागरा॥ उर्विमंडळडकर्मकित॥ भोगेद्रमानसरसावित॥ दंतबळेंउ
चलोनिदेत॥ आदिवराहारवालत॥ ३३॥ सभासककमुर्छितजालि॥ माहावि
रांचिशस्त्रेंगकलि॥ राजेभावितिउर्विचालि॥ रसातळाशिआजिच॥ ३४॥
रामेच्यापकेलेंदुखंड॥ प्रतापेंभरलेंहब्रह्मांड॥ पुष्पसंभारउदंड॥ वंदारकवर्षति॥ ३५॥

॥१९॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com